रेणु की कहानियों में अभिव्यक्त लोक संवेदना

डॉ. विजय
(सहायक अध्यापक)
श्री दुर्गा विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज,
सूरजपुर, बाराबंकी।

भारतीय भू-भाग के हिन्दी पट्टी के ग्रामीण सस्कृति व लोकजीवन में रची-बसी प्रेमचन्दीय कथा-विरासत को जिन चंद कथाकारों ने व्यापक आयाम प्रदान किया है, उनमें ऑचलिक कथा के अप्रतिम शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु का नाम अग्रण्य है। रेणु की कहानियों में लोक के विविध चित्र-छवि व्याप्त दिखाई देती है। इनकी कहानियों में लोक की एक सांस्कृतिक रुप तो दिखाई देती है पर उनका सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलू भी है। लोक की समग्रता पर चर्चा करते हुए डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपने विचारों को स्पष्ट किया है- 'कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले भू-भाग पर पनपता हुआ मानव समाज भारतीय लोक है। भारतीय लोकजीवन हमारे सुदीर्घ इतिहास का अमृतफल है। जो कुछ हमने सोचा किया और सहा उसका प्रकट रूप हमारा लोकजीवन है। लोक राष्ट्र की अमूल्य निधि होती है, हमारे इतिहास में सुन्दर तेजस्वी तत्व है वह लोक में कहीं न कहीं सुरक्षित है।'

रेणु की कहानियों में लोक की ऐसी समग्रता व्याप्त है किन्तु इसका सार्थक और जीवंत पक्ष यह है कि लोक जीवन का प्रस्तुतीकरण संवेदना के धरातल पर ही किया गया है। रेणु की कहानियों में दिखाई देती है। क्योंकि यह ज्ञात है कि सवेदना शून्य मनुष्य का चित्रण किसी कहानी को मर्मस्पर्शी नहीं बना सकती है। जबकि रेणु की कहानियों का महत्वपूर्ण तत्व संवेदना ही है जिसके कारण इनकी कहानियों में रसमयता और मानवीयता व्याप्त है। फणीश्वर नाथ रेणु ने ग्रामीण एवं शहरी अंचल के लोकजीवन की आर्थिक बदहाली और राजनैतिक पृष्ठभूमि के पिछड़ेपन को यथार्थवादी ढंग से अपने लेखन में प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने चित्रण में विविध पक्षों को सम्मिलित किया है जैसे लोकजीवन के प्यार, दर्द, आँसू, हँसी एवं जमीन की साँधी गंध को देखा, परखा और महसूस किया जा सकता है।

रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'विघटन के क्षण', ग्रामीण अंचल की पृष्ठभूमि की मार्मिक कहानी है जिसमें लोकजीवन की अनेकों संवेदनाएं दिखाई देती हैं। इसमें उन्मुक्त ग्राम-समाज है, हास-परिहास और मनोविनोद भी हैं। रानीडिह गाँव के लोग धीरे-धीरे शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। गाँव बिखर रहा है, टूट रहा है। इसी गाँव की मिट्टी में पली, बढ़ी विजया अब पटना में रहेगी। यह बात सबसे ज्यादा संवेदनशील नन्हीं बच्ची चुरमुनियाँ को सालती है। इसी कारण चुरमुनियाँ विजया से कुछ प्रश्न पूछती है- 'एक चादरी भर सर्दी पड़ गयी। अगहनी धान के खेतों में अब हल्की लाली दौड़ रही है अर्थात् अब दानों में दूध सूख रहा है। आलू के पौधों में पत्तियाँ लग गयी है। सुबह-सुबह गोभी की सिचाई कर रहे हैं, सभी।' इतने से ही चुरमुनियाँ शात नहीं होती है। वह विजया से हास-परिहास में ही दूसरा प्रश्न भी पूछ लेती है- 'विजेयादि। तू इतना सबेरे 'कोबी' जो पटाती हो, सो बेकार ही ना? तू तो अब पटना में रहेगी...।' चुरमुनियाँ के इस प्रश्न में मार्मिक संवेदना है लेकन गंगापुर वाली दादी ने उसे गाली देते हुए चुप करा देती हैं। जबकि नन्हीं चुरमुनियाँ उनकी भी पोल खोलते हुए उनके मुख पर ताला लगा देती है। वह अपने आगे अपने बाप और दादी की भी नहीं चलने देती है। जब कभी उसकी शरारती हरकतों से क्रोधित होकर दादी उसे मारती है तो उसके रुदन का संगीतमय मार्मिक संवेदना

दिखाई देती है- 'दादी बीच-बीच में बाल फकड़कर घसीटती-पीटत्ती भी है और उस दिन सारे गाँव में कुहराम मच जाता है, चुरमुनियाँ किसी राख के घूरे में लोट-लोटकर एकदम 'भूतनी' हो जाती है और उसके मुँह से छदबद्ध पंक्तियाँ-स्दनगीत अनायास ही निकलती रहती है- री-ई-ई बुढ़िया गंगपरनी, बड़घरिया की घरनी, हमरों सौतिनी- ई-ई बिना रे करनवा हमरा मारलि गे-ए- बुढ़िया गंगपरनी-ई-ई...

ग्रामीण अंचल में सुन्दर परिवेश में साथ-साथ वहाँ लोकजीवन की मिठास तो है पर अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी होने की वजह से युवा गाँवों से शहर की ओर पलायन करते हैं। लेकिन कुछ तो वहाँ की चकाचौंध भरी जीवन की कहानी को सुनकर आकर्षित हो रहे हैं। चुरमुनियाँ को युवाओं के शहर पलायन से दु:ख पहुँचता है और खेल मनोरंजन पर भी संवेदनशील दिखती है- 'सभी एक-एक करके गाँव छोडकर जा रहे हैं। सच्चिदा भी चला जायेगा तो गाँव की 'कबड्डी' में अकेले पाँच जन को मारकर दाँव अब कौन जीतेगा? आकाश छूनेवाले भुतहा जामुन के पेड़ पर चढ़कर शहद का 'उत्ता' अब कौन काट सकेगा? होली में जोगीडा और भडौआ गानेवाला अखाड़े में ताल ठोकनेवाला..... सच्चिदानंद भैया। इस कहानी में विघटन के क्षणों का सबसे मार्मिक वेदना नन्हीं बच्ची चुरमुनियों में ही दिखाई पड़ती है। आठ साल की बच्ची न जाने किस आशका से ग्रसित होती है और उसकी आत्मा आहत दीख पड़ती है।

रेणु की कहानियों में अलगाव, बिखराव या विघटन की जो पीड़ा व्याप्त है वो १९६० के बाद की कहानियाँ 'आत्मसाक्षी' और 'उच्चाटन' में दिखाई पड़ती है। उस समय भारतीय राजनीतिक पार्टियों में विभाजन होना ही रेणु की कहानियों में अलगाव, बिखराव और आपसी विवाद की पृष्ठभूमि की जन्मदाता होती है। ग्रामीण अंचल के विशेष पक्षधर के रुप में रेणु लोग संवेदना के सच्चे संवाहक के रुप में प्रचलित हैं। गाँव की उदासी भरे जीवन-यापन से वहाँ उनके मन में ग्राम के प्रति उच्चाटन पैदा कर रही है। 'उच्चादन' कहानी में रेणु ने गाँव से शहर में जाकर रिक्शा चलाने वाले रामविलास नामक पात्र की मार्मिक संवेदना को व्यक्त किया है। कर्ज के बोझ से दबा रामविलास शहर भाग जाता है और धन अर्जन कर जब गाँव वापस आता है तो उसके बदले रंग-रुप और बातों को देखकर सभी युवा उससे शहर जाने के लिए आग्रह करते हैं-' रामविलास भैया इस बार आपके साथ मैं भी जाऊंगा। मैं भी! यहाँ सालभर हलवाही करते हैं सिरफ एक सौ आठ रुपये में। वहाँ, एक महीने में दो सौ? रामविलास काका मैं भी। रामविलास पाहुन मुझे मत भूलिएगा। रिक्शा डिलेवरी नहीं तो किसी होटल में रखवा दीजिएगा। साला हम चिनियाँ बदाम बेचेगें। मामा, आप उस दिन कह रहे थे चूँकि रद्दी कागज-सीसी-बोतल का कारोबार भी खूब नफा वाला होता है...।' रेणु का लोक संसार यही है जहाँ लोक अपने जड़ों से उखड़ रहे हैं और गाँव से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। आजकल खेती-किसानी में युवाओं को अपना भविष्य नहीं दिख रहा है इन युवाओं की गहरी संवेदना का जाँच पड़ताल करते रेणु अपने कहानियों में दिखाई देते हैं।

रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'संवंदिया' लोकजीवन के रीति-रिवाज, रहन-सहन, बोली-भाषा आदि को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। इसमें गाँव के एक परिवार के विघटन की कहानी है। बड़े भाई की मृत्यु के बाद सभी भाई का अपने बड़ी भाभी से लड-झगड़कर बसने की कहानी और हवेली में सिर्फ बड़ी बहुरिया का रहना। खाने-पीने के अभाव में भी वह हवेली की लाज बचाती है लेकिन आखिर कितने समय तक। उसके सब्र का बाँध जब टूटता है तो गाँव के ही हरगोबिन संवदिया को बुलवाती है और अपने हृदय के संवाद को संवदिया से सुनाते हुई कहती है- 'संवाद सुनाते समय बडी बहुरिया सिसकने लगी। हरगोविन की आँखे भी भर आयी।... बड़ी हवेली की लक्ष्मी का पहली बार इस तरह से सिसकते देखा है हरगोविन ने।

वह बोला दिल को कड़ा कीजिए।'

'और कितना कड़ा करु दिल? माँ से कहना भाई-भाभिर्यो की नौकरी करके पेट पालूँगी। बच्चों के जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूंगी, लेकिन यहाँ अब नहीं... अब नहीं रह सकूँगी। कहना, यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जायेगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर डूब मरूँगी। वथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए... किसके लिए?'' संवदिया का काम इतना आसान नहीं होता है क्योंकि जिस रुप में उसे सुनाया जाता है उसी रुप में वहाँ संवाद सुनाना भी होता है। रेणु ने अपने कहानी में सवादिया के माध्यम से रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान आदि का यथार्थबोध चित्रण तथा संवेदना को दिखाया है।

रेणु की एक अन्य कहानी 'पंचलाइट' में भी लोकजीवन की संवेदना व्याप्त दिखाई पड़ती है। इस कहानी में पंचलाइट अर्थात् पैट्रोमैक्स के महत्व को दर्शाया गया है। जहाँ बिजली का संचार नहीं होता वहाँ पर लाइट का माध्यम पैट्रोमैक्स (पंचलाइट) बनता है। इस कहानी में जब गाँव के विभिन्न जातियों के सभी पंचायतों में पंचलाइट खरीदकर आ जाती है तो बाद में महतो टोला के पंचों ने भी पचलाइट खरीदने का फैसला किया। पंचलाइट को खरीदकर लाने का एक दृश्य देखिए- 'मेले के सभी पंच दिनदहाडे ही गाँव लौटे, सबसे आगे पंचायत का उड़ीदार पंचालाइट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे सरदार दीवान और पंच वगैरह। गाँव के बाहर की ब्राह्मण टोले के फुटगी झा ने टोक दिया- 'कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो?'

'देखते नहीं हैं पंचलेट है। बाभन टोली के लोग ऐसे ही ताव करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली बत्ती कहेंगे और दूसरों के पचलैट को लालटेन।' यहाँ पर ब्राह्मण टोले के फुटंगी की ईष्या की भावना प्रकट हो रही है। पंचलैट आने के बाद उसको जलाने वाला गोधन भी अपनी हुनर से टोले की लाज बचाई और अपने प्रति के नफरत को भी लोगों के हृदय से मिटाने का कार्य करता है। रेणु वैज्ञानिक सोच के लेखक हैं जो गोधन के माध्यम से पंचलैट जलाने का तरीका सीखाते हैं दृश्य देखिए- 'पंचलैट की रेशमी थैली में धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फुंकता, कभी पंचलैट की चाभी घुमाता। थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढती गयी, लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।' रेणु अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक समरसता के साथ मानवीय संवेदना के सुन्दर चित्र छवियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। फणीश्वर नाथ रेणु एक ऐसे कथाकार हैं जिनमें आन्तरिक संवेदना व्याप्त है जो इनको अन्य रचनाकारों से अलग करती है। रेणु जी को अपने मिट्टी की पहचान और उनमें जीवन-यापन करने वालों से अथक लगाव ही उन्हें साहित्यिक लेखन में और भी ऊँचाईयाँ प्रदान करती है।

सन्दर्भ सूची

१. भारतीय लोक साहित्य परपरा और परिदृश्य, विद्या सिन्हा, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ० ०५
२. रेणु रचनावली भाग-१, सं० भारत यायावर विघटन के क्षण (राजकमल प्रकाशन, पृ० ४४८
३. वही, पृ० ४४९
४. वही, पृ० ४४९
५.रेणु रचनावली भाग-१, सं. भारत यायावर- पृ.४५३
६. रेणु रचनावली भाग-१, सं० भारत यायावर, 'उच्चाटन, पृ० ३९४
७ रेणु की आंचलिक कहानियाँ, स० दक्षिणेश्वर रेणु, वाणी प्रकाशन संवदिया, पृ० ३४
८ वही पंचलाइट, पृ० सं. १४३
९. वही, पंचलाइट, पृ० १४६

***